उम्र
बस
कोंदसी

सूर्यप्रकाशन मन्दिर, बीकानेर

उम्र बस दो गज़ की

ओ॰पी॰ आजाद

प्रकाशक :
सूर्य प्रकाशन मन्दिर
बिस्सों का चौक, बीकानेर

प्रथम संस्करण : अगस्त 19[illegible]
मूल्य : पच्चीस रुपये मात्र

मुद्रक :
साखला प्रिंटर्स
बीकानेर

UMRA BAS NEEND SEE
(Gazal)
by AZIZ AZAD
PRICE Rs. 25.00



मां और बाबूजी को

मेरा वजूद भी क्या है तुम्हें बताऊँगा
जिस्म की कैद से जिस दिन भी निकल जाऊँगा

मुझे नज़र की हदों में समेटने वालों
ये कितनी तंग हदें हैं तुम्हें बताऊँगा

मैंने धुएं की लकीरों का भरम देख लिया
अब के आया तो हवा बन के करीब आऊँगा

ऐसी सांसें जो सवालों से बिंधी रहती हैं
उन्हें हयात का मक़सद नहीं बनाऊँगा

जिस्म की मौत जो होती है अभी हो जाए
मैं तेरा अक्स हूँ अदना नहीं कहाऊँगा

जो तेरा अक्स मुझ में उभर कर नजर आया
मैं जिस्म नहीं नूर का पैकर नजर आया

इक बूंद जो तपते हुए सहरा पे पड़ी थी
उसका वजूद सबको समंदर नज़र आया

मैं खो गया हूँ जब से खला हो के खला में
तो सारी क़ायनात का मंजर नजर आया

कोई तलाश अब कहीं बाकी नहीं रही
सब कुछ मुझे तो मेरे ही अन्दर नजर आया

जिस दिन से मैं मंजिल का पता जान गया हूँ
खुद ही अपने आपका रहबर नजर आया

उम्र बस नींद सी पलकों में दबी जाती है
ज़िन्दगी रात सी आंखों में कटी जाती है

कंपकंपाती हुई वो याद की ठंडी सी लकीर
क्यों मेरे ज़हन में आती है चली जाती है

मैं तो वीरान सा खण्डहर हूँ बियाबां के क़रीब
दूर तक रोज मेरी चीख सुनी जाती है

देख सूखे हुए पत्तों का सुलगना क्या है
आग हर सिम्त से जंगल में बढ़ी जाती है

उफ़ ! अंधेरे की तड़फ देख सुराखों के करीब
किस तरह धूप भी चेहरों पे मली जाती है

कौन जाने किस क़दम पर कब क़ज़ा खा जायेगी
ख़ौफ़ यूं लगता है जैसे यह हवा खा जायेगी

एक जंगल में अकेला घिर गया हूं इस कदर
लग रहा है मुझको मेरी ही सदा खा जायेगी

अब तो ऐसे दौर में बचना कहीं मुमकिन नहीं
डॉक्टर से बच गये तो यह दवा खा जायेगी

तू भी तो मेरी तरह इस दौर की गर्दिश में है
आ कि मिल के कुछ करें ये बेहया खा जायेगी

रहबरों की अब नजर से साफ़ लगता है 'मजीज़'
यह नजर पूरा का पूरा क़ाफ़िला खा जायेगी

पर नोच परिन्दों के परवाज की दावत है
यह कैसी नवाजिश है यह कैसी सखावत है

कुछ ग़ौर करो यारो शब्दों की शरारत पर
साजिश तो नहीं जिसका अब नाम सियासत है

जख्मों की मसीहाई नाखून किये जाएं
यह कैसा मदावा है यह कैसी हिफ़ाज़त है

इस दौरे-हवादिम में क्या चीज है जीना भी
हर रूह में बेचेनी, हर सांस अलामत है

तेवर के बदलते हो आंखें न चली जाएं
कमजोर की पलकों का उठना भी बग़ावत है

फिर हमें सौगात में यों सुबकियां दे जायेंगे
हम तो फिर सो जायेंगे वो थपकियां दे जायेंगे

सोख कर ले जायगे ताजे गुनाहों का लहू
सिर्फ यादों की सुनहरी तितलियां दे जायेंगे

एक काली रात में हमदर्द बन कर दोस्तो
फिर किसी उजली सुबह की अस्थियां दे जायेंगे

चाहतों की चादरों पे दाग़ दे जायेंगे फिर
दिल में जख़्मों की सुलगती बस्तियां दे जायेंगे

जिनको ढोना ही पड़ेगा जिन्दगी की शाम तक
ऐसी कांधों पे हमारे अर्थियां दे जायेंगे

इस तरह तुम जब कभी सैलाब में घिर जाओगे
हाथ में वो कागजों की किश्तियां दे जायेंगे

उकताए जिस्मों पे अपने थकन ओढ़ कर आए हैं
एक कुली की तरह न जाने कितना बोझ उठाए हैं

घर आने की अकुलाहट थी आये तो आभास हुआ
हम परदेसी फकत यहां पर रात बिताने आए हैं

इच्छाओं की चादर उसने क्यूं फैलादी आंगन में
हम तो लेकिन सारी खुशियां बस मुट्ठी भर लाएं हैं

उस दर्पन का पानी उतरे एक जमाना बीत गया
सूरत नजर नहीं आयेगी फिर भी ध्यान लगाए हैं

तुमने जो देखा है वो तो रंगों की कुछ परतें हैं
इन परतों के नीचे जाने कितने दाग छुपाए हैं

इस आगन की तुलसी जिसका पत्ता-पत्ता टूट गया
एक है सूखा पेड़ कि जिसमें सारे आस लगाए है

इक भटकता क़ाफ़िला है ज़िन्दगी
मौत तक का फासला है ज़िन्दगी

भीड़ में अनजान बच्चे की तरह
मुद्दतों से गुमशुदा है ज़िन्दगी

चलते चलते हर कोई खो जायेगा
वो अंधेरा रास्ता है ज़िन्दगी

एक पत्ते के चटखने की सदा
एक पल का हादसा है ज़िन्दगी

आजकल के दोस्तों की ही तरह
हाय कितनी बेवफ़ा है ज़िन्दगी

आज तक कोई समझ पाया नहीं
क्या पता यह क्या बला है ज़िन्दगी

अब जिन का है नाम मुहाफिज अजगर जैसे लगते हैं
दहशत के मारे लोगों को इनके साये डसते हैं

ऐसा अगर चमन है बोलो कैसे उस पर नाज करें
जहां परिन्दे चोंच में अपनी तिनके लेकर फिरते हैं

जंगल हो तो मान भी जाएं पर बस्ती का क्या कहिए
बगलों में आईन दबाये कितने गिरगिट मिलते हैं

भरी भीड़ में लुटे मुसाफिर कोई गवाह तैयार नहीं
क्या नाबीने ही नाबीने इस बस्ती में बसते हैं

चिनगारी ने हवा के बल पे आग लगा दी घर-घर में
अपना काम शुरु है यारो आओ लाशें गिनते हैं

धोखा है कुछ नहीं मिलेगा इन रंगीन नजारों से
कब अंधियारा दूर हुआ है आसमान के तारों से

बदले-बदले इस मौसम का कोई भी विश्वास नहीं
आग बरसने लगे न जाने कब इन शोख बहारों से

झूठे ख्वाब देखने वाले तावीरों का जिक्र न कर
अभी और टकराना होगा पत्थर की दीवारों से

हमको ऐसी दीवारों के सायों की दरकार नहीं
लाशों पे तामीर हो जिनकी रिसता खून दरारों से

इनके भी शहतीर गिर गये नये मकां तामीर करो
अब कोई उम्मीद नहीं है इन ढहती मीनारों से

लब तरसते रहे हैं हंसी के लिए
कैसी लानत है यह इस सदी के लिए

आदमी आदमी से रहे अजनबी
लोग ज़िन्दा हैं फिर किस खुशी के लिए

हर सुबह है सिसकती हुई शाम सी
रूह बेचैन है रोशनी के लिए

अब तो सूरज निकलता है जैसे कोई
ग़मज़दा चल दिया खुदकुशी के लिए

ऐसी दुनिया में जीना ही है गर हमें
प्यार लाज़िम है इस ज़िन्दगी के लिए

हम मुहब्बत के क़ाबिल नहीं न सही
इक बहाना सही दिल्लगी के लिए

मिट्टी के बदन कितने ही सांचों में ढल गये
सूखे हुए पत्तों की तरह लोग जल गये

इतनी हिफ़ाजतों के कवच पहन कर भी लोग
पल भर में मोम की तरह कैसे पिघल गये

अपनी नजर पे नाज था जिनको बहुत मगर
पहुँचे जो कोहेतूर पे नक़्शे बदल गये

आकाश बन के देखने वालो यह क्या हुआ
क़तरे जो लग रहे थे समन्दर निगल गये

दुनिया में आज वो ही सलामत है दोस्तो
जो लोग अपने आपसे आगे निकल गये

अब जिनका है नाम मुहाफिज अजगर जैसे लगते हैं
दहशत के मारे लोगों को इनके साये डसते हैं

ऐसा अगर चमन है बोलो कैसे उस पर नाज़ करें
जहां परिन्दे चोंच में अपनी तिनके लेकर फिरते हैं

जंगल हो तो मान भी जाएं पर बस्ती का क्या कहिए
बगलों में आईन दबाये कितने गिरगिट मिलते हैं

भरी भीड़ में लुटे मुसाफिर कोई गवाह तैयार नहीं
क्या नाबीने हो नाबीने इस बस्ती में बसते हैं

चिनगारी ने हवा के बल पे आग लगा दी घर-घर में
अपना काम शुरु है यारो आओ लाशें गिनते हैं

धोखा है कुछ नहीं मिलेगा इन रंगीन नजारों से
कब अंधियारा दूर हुआ है आसमान के तारों से

बदले-बदले इस मौसम का कोई भी विश्वास नहीं
आग बरसने लगे न जाने कब इन शोख बहारों से

झूठे ख्वाब देखने वाले तावीरों का ज़िक्र न कर
अभी और टकराना होगा पत्थर की दीवारों से

हमको ऐसी दीवारों के सायों की दरकार नहीं
लाशों पे तामीर हो जिनकी रिसता खून दरारों से

इनके भी शहतीर गिर गये नये मकां तामीर करो
अब कोई उम्मीद नहीं है इन ढहती मीनारों से

लब तरसते रहे हैं हंसी के लिए
कैसी लानत है यह इस सदी के लिए

आदमी आदमी से रहे अजनबी
लोग जिन्दा है फिर किस खुशी के लिए

हर सुबह है सिसकती हुई शाम सी
रूह बेचैन है रोशनी के लिए

अब तो सूरज निकलता है जैसे कोई
ग़मज़दा चल दिया खुदकुशी के लिए

ऐसी दुनिया में जीना ही है गर हमें
प्यार लाज़िम है इस ज़िन्दगी के लिए

हम मुहब्बत के क़ाबिल नहीं न सही
इक बहाना सही दिल्लगी के लिए

मिट्टी के बदन कितने ही साँचों में ढल गये
सूखे हुए पत्तों की तरह लोग जल गये

इतनी हिफ़ाजतों के कवच पहन कर भी लोग
पल भर में मोम की तरह कैसे पिघल गये

अपनी नजर पे नाज था जिनको बहुत मगर
पहुँचे जो कोहेतूर पे नक़्शे बदल गये

आकाश बन के देखने वालों यह क्या हुआ
क़तरे जो लग रहे थे समन्दर निगल गये

दुनिया में आज वो ही सलामत है दोस्तो
जो लोग अपने आपसे आगे निकल गये

आ के दुनिया में यूं लापता हो गये
जैसे इन्सां नहीं हैं हवा हो गये

सिर्फ रूहें भटकती रहीं शहर में
जिस्म जैसे कि हम से जुदा हो गये

हमको मांगा गया था दुआ मांग कर
हम मिले हैं तो जैसे सजा हो गये

क्या यही है फ़क़त हासिले-ज़िन्दगी
सिर्फ पैदा हुए और फ़ना हो गये

जिनको मंज़िल मिली ही नहीं उम्र भर
हम खलाओं में भटकी सदा हो गये

तारीकियों में हमने जलाए थे जो चिराग
वे सिर्फ हो के रह गये हैं रोशनी के दाग

एक अंधी कंदरा में कैद हैं जिनके सबब
हम उन्हीं से पूछते हैं फिर निकलने का सुराग

अब किसी मुद्दे पे यारों सोचना बेकार है
जब कि गिरवी रख दिये हैं उनके हाथों में दिमाग

इस कदर ठंडा लहू है गर्म होता ही नहीं
आदमी की रूह की क्यों बुझ गई है सारी आग

कशमकश में आदमी का हो गया जीना मुहाल
पेट कहता है कि रुक जा रूह कहती है कि भाग

माना इस दौर में जीना भी सजा है यारो
प' जरा यह तो कहो किस की खता है यारो

वक़्त आने पे जो नाख़ून कुतरते हैं खड़े
ऐसे लोगों का बुरा हाल हुआ है यारो

हमने खोले थे दरीचे ये रोशनी के लिए
आंख चुंधियाए तो सूरज से गिला है यारो

ये हैं वो पेड़ जो साये भी निगल जाते हैं
तुमने किस वहम में सिन्दूर मला है यारो

बागबानों ने ही ये मिल के चमन लूटा है
आप बेकार ही मौसम से खफा हैं यारो

हम तो लफ़्फ़ाज हैं अलफाज लुटा सकते हैं
झूठ को चाहें तो हम सच भी बना सकते हैं

बस इक चाय की प्याली से ही गरमा के बदन
घंटों माहोल में तूफान उठा सकते हैं

अपनी जेबों में भी लेबल है कई रंगों के
जिसको चाहें उसे माथे पे लगा सकते हैं

कोई शादी, कोई मातम, किसी नेता की सभा
जैसा मौका हो वही गीत सुना सकते हैं

कितनी बातें हैं कि जिनका न कोई सर न सिरा
बहस की रौ में ही इक उम्र बिता सकते हैं

हम हकीकत में तुम्हें कुछ भी नही दे सकते
सिर्फ लफ़्ज़ों का तमाशा ही दिखा सकते हैं

यह सभी सच है पर इतना भी कोई कम तो नही
तुमको हालात की तस्वीर बता सकते हैं

हम रोज शिकायत के अलफाज़ उगलते हैं
क़िरदार के मुहं पर कमजोर निकलते हैं

हुक्काम से समझौता दावा है बगावत का
दस्तूरे-वफादारी हम खूब समझते है

जब जब भी तलाशे हैं बरगद ही तलाशे है
है ज़हन में ठंडापन जज्बात सुलगते हैं

झरलों के तले बैठ टीलों का भरम लेकर
है आंच की अगुवाई साये में झुलसते हैं

न सच की तरफदारी न झूठ से शिकवा है
मुह देख के लोगों का हर बात उगलते हैं

मुजरे की अदा लेकर सरकार से शिकवा है
गजरे की तरह् हमको क्यूं आप मसलते हैं

समझे बग़ैर मुट्ठियां हवा में न उछालिए
कितने ही हाथ दौर के गिद्धों ने खा लिए

शेरों की शहादत का सिला बांट कर यहां
कितने ही सियारों ने मुकद्दर बना लिए

सीने तुम्हारे गोलियां पहचानती हैं दोस्त
कानून तोड़ने के बहाने बना लिए

चेहरे वही हैं सामने बदले हुए नकाब
तुमने तो इन्कलाब के सपने सजा लिए

वो तो थमा मशाल कहीं जा के सो गये
हम हैं कि उस से अपने नशेमन जला लिए

कंधे तुम्हारे मुल्क की ताकत हैं ऐ अजीज
क्यों आपने बेकार के पत्थर उठा लिए

मंज़िल के तलबगारों सफर क्यूं नहीं करते
इन पांवों की राहें हैं जिधर क्यूं नहीं करते

रहबर तलाशना ही ज़रूरी तो नहीं है
इनके बगैर आप गुजर क्यू नही करते

तरसी हुई आंखों से फलक देख रहे हो
कुछ अपने परो पे भी नजर क्यूं नही करते

क्यों अपने घरों में ही छुपे कांप रहे हो
क्या खौफ है पत्थर का जिगर क्यूं नहीं करते

तुम जोश में पत्थर तो बहुत फेंक चुके हो
समझो भी कि आखिर ये असर क्यू नहीं करते

लोग सौ रंग बदलते है लुभाने के लिए
कितने होते हैं जतन एक बहाने के लिए

राह रुक जाती है जिस्मानी हदों तक जाकर
फिर मुहब्बत का सफर खत्म जमाने के लिए

चंद लम्हों में किया चाहेंगे बरसों का हिसाब
किस को फुर्सत है यहां साथ निभाने के लिए

प्यार करते हैं छुपाते है गुनाहों की तरह
कौन तैयार है इल्जाम उठाने के लिए

कैसे मुमकिन है कि हर मोड पे मिल जाएं अज़ीज
जिन्दगी कम है जिन्हें अपना बनाने के लिए

कुछ इस तरह से साथ मेरे हमसफर चले
साए से जैसे जिस्म कोई बेखबर चले

ख़ामोशियों का सर्द अंधेरा है इस क़दर
यूँ डूबते सूरज की तरह हम किधर चले

जैसे कि आसमां का कोई बोझ सिर पे हो
हर क़दम लगा कि जैसे उम्र भर चले

वो आ के एक मोड़ पे रुके तो ये लगा
काश कि कुछ और ये दौरे-सफर चले

इतना भी कम नहीं कि मेरे हमसफर रहे
जैसे भी मेरे साथ चले वो मगर चले

जिस्म में जां की तरह मैंने बसाया तुमको
अपने अहसास की परतों में छुपाया तुमको

ओ मेरे जिस्म को गरमी से झुलसने वाले
मैंने पलकों के दरीचों में सजाया तुमको

मुझसे यूं बचके निकलते हो गुनाह हूं जैसे
मेरा साया भी कभी रास न आया तुमको

खुश्क मिट्टी हूं मिले प्यार की हलकी सी नमी
यही उम्मीद लिए अपना बनाया तुमको

तुम मिले जब भी जमाने की हवा बन के मिले
मैंने हर बार ही बदला हुआ पाया तुमको

जिन्दा हैं तेरे सामने लाशों की तरह हैं
हां खेल तेरे हाथ मे पासों की तरह हैं

सौंपा तुझे वजूद तो शिकवा ही क्या करें
हम जिस्म नही तेरे लिबासों की तरह हैं

तू एक ही बिजली की तरह कौंध रही है
हम लोग तो जुगनू के उजासों की तरह हैं

ता-उम्र तेरी याद में जलते हुए चिराग
अब रात को उखड़ी हुई सांसों की तरह हैं

तरसे हैं इक नजर को भी रह के तेरे क़रीब
हम बदनसीब भी उन्हीं प्यासों की तरह हैं

इश्तेहारों की तरह हर एक चेहरा हो गया
शहर गूंगा हो गया मीनार बहरा हो गया

एक भी चेहरे पे उजियारा नज़र आता नहीं
शोर कब से हो रहा है कि सवेरा हो गया

रोशनी भी हो गई है अब तुम्हारी ही तरह
जब जरूरत पेश आई है अंधेरा हो गया

हर तरफ मंडरा रही है खौफ की परछाइयां
यह शहर है या कोई भूतों का डेरा हो गया

कौनसा वो ज़हर देते हो दवा के नाम पर
दर्द बढ़ता ही रहा हर ज़ख्म गहरा हो गया

ज़िन्दगी अब हो गई है एक नागिन की तरह
आदमी बस एक बूढ़ा सा सपेरा हो गया

जिस्म सारा घाव सा लगने लगा है
खून में सुलगाव सा लगने लगा है

आंच से इन्कार करते हो करो
आदमी अलाव सा लगने लगा है

क्या हुआ कि अब तो मेरे मुल्क में
हर तरफ तनाव सा लगने लगा है

हम वही, रिश्ते वही हैं दिल वही
फिर भी क्यूं अलगाव सा लगने लगा है

अब हिफाजत का कोई भी इन्तजाम
कागजी इक नाव सा लगने लगा है

ये शहर है कि या कोई श्मशान हो गया
गुमगश्ता रूहों का कोई मकान हो गया

इस भीड़ कें फंले हुए रिश्तों के जाल में
मरते हुए दरख्त सा इन्सान हो गया

हैं नाम फक़त तख्तियां पहचान के लिए
ग्रादमी जैसे कोई सामान हो गया

बढने लगी हैं इस तरह ग्रापस में दूरियां
ग्रपने ही घर में ग्रादमी ग्रनजान हो गया

पत्थर की बुर्जियों में वहम पालता रहा
कैदी को बादशाही का गुमान हो गया

बतियाते गांवों के रास-ओ-रंग खो गये
भीड़ भरे शहर क्यूं वीराने हो गये

सिर्फ सन्नाटा पसरता जा रहा है हर तरफ
सारे जिन्दा लोग जैसे मुंह छुपा के सो गये

इक धुआं सा उठ रहा है हर तरफ माहोल में
आदमी जैसे सुलगती लकड़ियों से हो गये

एक जिन्दा है फक़त इतिहास उनका दोस्तो
जो गरीबों के लहू से हाथ अपने धो गये

जो बचे तूफान से उनको किनारे खा गये
इस तलातुम की नज़र कितने सफ़ीने हो गये

सिलसिले सवालों के चलते रहे उम्र भर
हम तो जवाबों में उलझे रहे उम्र भर

जाने कहाँ खो गये हम तुम यूंही बीच में
हो के भी हम हमसफर सहमे रहे उम्र भर

अपनी हदें तोड़कर मिल तो गये थे मगर
बीच में सवालों के पहरे रहे उम्र भर

सूरज चमकता रहा सिर पे सवालों सा
यूंही अन्धेरे हमें घेरे रहे उम्र भर

धरती की छाती पर कितनी सलीबें है
जीने की चाहत में लटके रहे उम्र भर

तुमने हर दौर के सूरज का-लहू चाटा है
अब तो आकाश में भी जख्म नजर आता है

एक तपते हुए सहरा की तरह फैल गये
जिस्म तो जिस्म है साया भी झुलस जाता है

किस सलीके से मिटा देते हो लोगों के निशां
जैसे बिस्तर से कोई सलवटें मिटाता है

कैसी दहशत है कि अपनी भी सांस ऐसे लगे
जैसे सीने पे कोई सांप सरसराता है

ऐसे बच्चे को भला नींद कहां आयेगी
थपकियां दे के जिसे भेड़िया सुलाता है

वो जब भी मिला राह में फैला हुआ मिला
उसके जो आस-पास था सहमा हुआ मिला

हैरान हूँ कि जब भी जहां देखता हूँ मैं
चेहरा उसी का हर जगह चिपका हुआ मिला

हर मोड़, हर मकाम पे उसका ही शोर है
हर कोई उसका नाम ही लेता हुआ मिला

गुजरा है जब भी शहर की सड़कों से वो कभी
हर मील का पत्थर मुझे टूटा हुआ मिला

छोटे है मेरे शहर के मीनार किस क़दर
बस एक ही वो सर मुझे उठा हुआ मिला

रोशनी के नाम पे क्या खूब बहलाया गया
जो दिखाई दे रहा था वो भी छुड़वाया गया

लोग जो अब तक नहीं समझे यहां तो क्या करें
एक ही किस्सा यहां हर बार दोहराया गया

वो ही चाहें, वो ही राहें, वो ही मंजिल, वो ही बात
ख्वाब तो कुछ और था जो हमको दिखलाया गया

क्या ग़ज़ब है कल जो क़ातिल थे मसीहा हो गये
किस नये अन्दाज़ से यह जाल फैलाया गया

लोग अब क्यों सो गये हाथों के पत्थर फेंक कर
क्या समझते हैं यहां से जुल्म का साया गया

सूरत, मेकअप, फैशन, आशिक, मरना प्यार
वादे, वफा, इरादे, किस्से सपना प्यार

चाहें, आहें, आंसू, दर्द, शिकायत, झूठ
हुस्न, जवानी, जलवे, जुल्फ़े, छलना प्यार

केबिन, कोने, मरघट, झुरमुट, सूने घाट
गुस-खुस, फुस-फुस, मिलना और खिसकना प्यार

दामन, करवट, आदत, रात, चांदनी, छत
लज्जत, लुत्फ, फिसलना, दलदल, फंसना प्यार

धोखा, गिला, बहाना, खटपट, खेल तमाम
बाकी उम्र सिसकना, जलना, मरना प्यार

जब भी अपने से मैं उलझता हूँ
जाने क्यूं बर्फ़ सा पिघलता हूँ

गये वक़्तों की याद उफ़् तौबा
ज़िक्र करते हुए लरजता हूँ

ज़ख़्म ही ज़ख़्म बन गया सारा
ये न पूछो कहां से दुखता हूँ

उम्र की धूप ढल गई जब से
मैं यूंही शाम सा सिसकता हूँ

गूंज उठती है मन की वादी में
एक नद्दी सा जब उफ़नता हूँ

आप दर्पन लिये चले आये
मैं तो वैसे ही ख़ुद से डरता हूँ

यूँ रंग बदल के क्रान्ति आई है दोस्तो
बुढ़िया ने ज्यों खिजाब लगाई है दोस्तो

रद्दो-बदल के नाम इतना ही बस हुआ
कंधे बदल के लाश उठाई है दोस्तो

बाजीगरों ने भीड़ को उल्लू बना दिया
क्या गजब की हाथ सफाई है दोस्तो

बंदरों के हाथ में यूं थाम कर मशाल
अपने ही घर में आग लगाई है दोस्तो

यूं एकता के नाम पे टुकड़ों में बंट गये
लगता है मेंढकों की तुलाई है दोस्तो

चंदे के सिवा कुछ नहीं होता है आजकल
पेशा बना लिया है ठगाई है दोस्तो

मुद्दत हुई है आप हमें मिल नहीं रहे
क्या हम किसी भी प्यार के काबिल नहीं रहे

शिकवा है न सवाल हैं, न ही दुआ-सलाम
नजरें झुकी हैं और ये लब हिल नहीं रहे

नजरें वही हैं, दिल भी वही, हम भी हैं वही
बस दौरे-ग़म में दोस्त ही शामिल नहीं रहे

तुमसे गिला हो क्या करें ऐ मेरे नाखुदा
अपने नसीब में, कभी साहिल नहीं रहे

क्यूं आ के अब रुकेंगे यहां आपके क़दम
पत्थर हैं हम तो राह के मंजिल नहीं रहे

जिनमें वफ़ा हो, प्यार का अहसास हो अज़ीज
लोगों के पास आजकल वो दिल नहीं रहे

लग रहा है फिर वो पशेमान हो गया
दुश्मन वो मेरी जां का महरबान हो गया

आंखों में प्यार देख के सहमा हुआ हूँ मैं
अब उसकी मुहब्बत से परेशान हो गया

मुझ से किसी भी बात का शिकवा न हो सका
वो भी हर एक बात से अनजान हो गया

वो है नहीं तो एक अधूरी कथा-सा हूँ
जैसे मेरी हयात का उनवान हो गया

उसके बगैर मैं भी कहां जी सका अजीज़
मेरे बगैर वो भी परेशान हो गया

आप अब बहला रहे हैं उम्र जब जाने लगी
हमको इन हमदर्दियों पे अब हंसी आने लगी

फिक्र अब होने लगा है उन चिरागों के लिए
वक़्त बुझने का हुआ जब रोशनी जाने लगी

फिर मुझे आवाज न दो राह के उस छोर से
ये सदाएं फिर मेरे जज्बात भड़काने लगी

आपकी मजबूरियां फिर रोक लेंगी आपको
फिर मेरे तन्हा सफर पे क्यूं तरस आने लगी

जब नहीं जीने दिया तो चैन से मरने तो दो
जिन्दगी के नाम से अब रूह घबराने लगी

तुम्हारा रुख है जिधर हम तो उधर जायेंगे
हमें खबर ही कहां है कि किधर जायेंगे

इस कदर छाया हुआ है तेरे जल्वों का असर
प्यार से देख लो शीशे में उतर जायेंगे

तेरा गम, तेरी जफा, तेरा सितम कुछ भी सही
तुमने नजरों से गिराया तो बिखर जायेंगे

हमसे देखी नहीं जाती तेरी जबीं पे शिकन
फिर से सीने के कई जख्म उभर जायेंगे

जाने क्यूं खौफ सा लगता है कई बार अजीज
क्या करेंगे जो तेरे दिल से उतर जायेंगे

धूप से जां बचे छांव में जल गये
उम्र ढलने से पहले ही हम ढल गये

मंजिलों का हमें कुछ पता ही नहीं
बेसबब हम कहां से कहां चल गये

जो भी आये हैं बनके मसीहा यहां
अपनी चारागरी से हमें छल गये

आप हैरान हैं हम मिटे क्यूं नहीं
सिर्फ वादों पे हम किस तरह पल गये

और लोगों ने धोखे से लूटा मगर
आप हमदर्दियों से हमें छल गये

मत पूछ ये कि मुझको तुझे पा के क्या मिला है
तू ही जिन्दगी का हासिल सांसों का सिलसिला है

हर लम्हा जिन्दगी का महका हुआ है जैसे
तेरे ग़म ने जिसको सींचा वो गुल निखर रहा है

इक उम्र नाम कर दी जा तेरी ख्वाहिशों के
कुछ और गम अता कर अभी जी नहीं भरा है

हर ज़ख़्म ख़ुद ही देना ख़ुद ही मदावा करना
मेरी बन गई है आदत तेरा शौक हो गया है

मेरे हाले-दिल पे आखिर क्यूं हो गये परेशां
किसने कहा है यारा तेरी कोई ख़ता है

एक आवारा नदी में जैसे तिनके का सफर
इस तरह कुछ हो रही है जिन्दगी अपनी बसर

रुख बदलती इन हवाओं में उड़े पत्तों से हम
हम से मत पूछो कहां होगी हमारी रहगुजर

हाथ थामे चल रहे हैं आपका ऐ रहबरो
हम तो नाबीने हैं हमको ले चलो चाहे जिधर

ओस भीगी सुब्ह में भी हम सुलगते ही रहे
भेष में ऊषा के उतरी चिलचिलाती दोपहर

मोम के पुतलों पे जैसे धूप पड़ती है अजीज
इस तरह क्यूं पड रही है आपकी हम पे नजर

हमको न दो यूं घने गम के साये
कहीं होसले की उमर बढ़ न जाये

न यूं आग बांटो जरा ये भी देखो
लपट में कहीं ये चमन जल न जाये

बहुत खुरदरी है हक़ीक़त धरती
अभी तुम हो संवली सी दुनिया बसाये

जब भी चले तुम तो पांवों के नीचे
हमारे सरों के ही ज़ीने बनाये

कदम दो क़दम भी चले कब अकेले
हमी ले चले हैं उठाये-उठाये

जरा सोच लो यूं मिटाने से पहले
तुम्हें फिर जरूरत कभी पेश आये

जनम-जनम का साथ मगर क्यूं ग्रनजाने-से लोग
बेगानों से लगे हैं मुझको पहचाने-से लोग

बना बना कर ढाह रहे हैं रेत के घर हों जैसे
नाप रहे हैं रिश्तों को किस पैमाने से लोग

सहमे-सहमे, घुटे-घुटे से खुली हवा से दूर
बंद पड़े हैं बस ग्रंधियारे तहखाने-से लोग

ताने बाने जोड़ के उसमें उलझ गये बेचारे
ग्रपने ही पर नोच रहे हैं दिवाने-से लोग

पल भर प्यार जताया पल में टूट गये याराने
गुब्बारों से खेल रहे हैं बचकाने-से लोग

किस को पूछें, कौन बताए, किसका क्या है हाल
बेहाली में भाग रहे हैं दीवाने-से लोग

रेत की लकीरें हैं मिटते उजाले हैं
जिस्म के घरौंदे में उम्र के जाले हैं

तुम हो बताओ इसे कैसे कहें जिन्दगी
रोजे-अजल से ही मौत के हवाले हैं

जिन्दगी का जहर पिए दौर की मसीहाइ
सोज की भभूत मले दर्द के शिवाले हैं

आसमा की आंखो में शूल से चुभे है क्रम
धरती की छाती पर पीप भरे छाले हैं

घेरे हुए हैं हमें क़ाफ़िले सवालों के
क्या दे जवाब कोई होंठों पे ताले हैं

कुल मिला कर मुल्क में यही मियामत हो रही है
नित नई फैशन से जनता की हजामत हो रही है

चन्द चमचेड़ों ने कब्जा कर लिया चारों तरफ
रोशनी अपने लिए तो एक लानत हो रही है

यह ग़लत है कि बटेरें लग गईं अंधों के हाथ
आ के खुद फंसना बटेरों की ही आदत हो रही है

कोई चारागर नहीं है आज मेरे मुल्क का
हर तरफ बस लूट है कौवों की दावत हो रही है

आज हम किसके भरोसे जी रहे हैं दोस्तो
यह हिफाजत तो नहीं हम में अदावत हो रही है

खुद को ही करना पड़ेगा अपना कोई इन्तजाम
दिन ब दिन खस्ता से खस्ता अपनी हालत हो रही है

ऐसे इस दौर का हर लम्हा जीया है यारो
जैसे अंगार को होठों पे धारा है यारो

चीख जैसे किसी सेहरा में भटक कर रह जाए
सिलसिला उम्र का कुछ यूं ही रहा है यारो

शबले-आदम से गुमां होने लगा है ऐसे
जैसे तुर्बत पे कोई बुझता दिया है यारो

इस से बदतर कोई माहौल भला क्या होगा
सांस जैसे कि कोई सांप डसा है यारो

जिन्दगी है या कोई लफ्ज है ऐसा जिसको
किसी ने रेत पे उंगली से लिखा है यारो

सिर्फ़ बातें ही कब तक बनाओगे अब
कुछ तो करके भी आख़िर दिखाओगे अब

काग़ज़ी ये सलीबें उठा के ऐ दोस्त
यूँ मसीहा तो तुम बन न पाओगे अब

तुमसे उंगली पे पर्वत उठेगा नहीं
इन ग्वालों को कैसे बचाओगे अब

क़दम तो तुम्हारे बढ़े हीं नहीं
सिर्फ़ माथा कहाँ तक चलाओगे अब

भोर आई और आके चली भी गई
ख़ुद न जागे हमें क्या जगाओगे अब

चलनियों को बनाने लगे कश्तियाँ
साफ़ लगता है बेड़ा डुबाओगे अब

रोज मतलब को ही ईमान बनाए रखिये
अपने जीने का ही सामान जुटाए रखिए

थपकियां देके ममीरों पे सुलाने वालो
धर्म के नाम पे बाजार चलाए रखिए

हो के आजाद तो आकाश खुला मांगेंगे
नोच के पंख परिन्दों को उडाए रखिए

यूंही ख्वाबों में दिखा कर यह हंसी ताजमहल
किसी मुमताज को दीवाना बनाए रखिए

झूठ और सच का तो इन्साफ तुम्हें करना है
जी में आए वही इल्जाम लगाए रखिए

माना कि दीवानी है, नादान जवानी है
पर उम्र यही यारो जीने की निशानी है

मचला हुआ दरिया है तूफान है सीने में
रोके से नहीं रुकता बहता हुआ पानी है

यह खेल है शोलों का कांटों से उलझना है
खुद अपने ही दामन में बस आग लगानी है

पुरजोश जवानी का हर बीता हुआ लम्हा
यादों का खजाना है, इक प्रेम कहानी है

लबरेज हो पैमाना जब जामे-जवानी का
हर शाम नशीली है, हर सुब्ह सुहानी है

हलचल है न तूफां है ठहरे हुए पानी में
दिन बीत गये जिनके आनी है न जानी है

मैं खुद से अलग अपना बदन देख रहा हूं
उतरा हुआ इक सर में वजन देख रहा हूं

इस दौर में हर सांस भी सीने पे बोझ है
इन्सान पे हावी है थकन देख रहा हूं

फूलों के बदन सब यहां कांटों से बिंधे हैं
मैं तो कोई और चमन देख रहा हूं

इन्सान से बढ़ कर हैं तराशे हुए पत्थर
इस दौर का उलटा है चलन देख रहा हूं

ताज़ा हवा का कोई तो झोंका मिले कहीं
माहौल में कितनी है घुटन देख रहा हूं

होने का मेरे कोई यहां अर्थ नहीं है
मैं जीने का बेकार जतन देख रहा हूं

नाखुदा बन के लोग आते हैं
खुद किनारों पे डूब जाते हैं

दो क़दम साथ जो निवाह न सके
ख्वाब सदियों के क्यों दिखाते हैं

खुद की हालत है रहम के काबिल
मुझसे हमदर्दियां जताते हैं

प्यार का नाम ले के होठों पे
क्यूं तमाशा इसे बनाते हैं

लोग रिश्ते बनाके जन्मों के
कच्चे धागों-से टूट जाते हैं

रोज सूरज सवाल करता है
क्यों उजालों से मुंह छुपाते हैं

मैं तो उनकी भी लाज रख लूंगा
उंगलियां मुझ पे जो उठाते हैं

इस दौर का कोई भी निगाहबान नहीं है
इन्सान का जीना यहां आसान नही है

रहबर जिन्हें कहते हो लुटेरे हैं वतन के
हैवान हैं इनमें कोई इन्सान नही है

तोले है सदा हमने ये बेकार के पत्थर
इन्सानियत का कोई कदरदान नही है

चाहें जो अगर हम तो ये मौसम भी बदल दे
पर अपनी ही ताकत का हमें ज्ञान नहीं है

यूं लोग खिलौनों की तरह खेल रहे हैं
जैसे बदन में अपने कोई जान नही हैं

हम जी रहे हैं खुद के भरोसे पे दोस्तो
इस में किसी के बाप का अहसान नहीं है

मैं भी हूँ खामोश और तू बिलकुल गूँगा-बहरा है
इस बस्ती में आखिर क्यों सन्नाटा इतना गहरा है

दिन लगता है खंजर जैसा सूई जैसी रात चुभी
हर आंगन में खौफ का साया सांस-सांस पे पहरा है

फिर नफरत ने आग लगाई रिश्ते सब नासूर हुए
पर तेरा मेरा तो साथी वही पुराना चेहरा है

सच का गला दबा रखा है झूठ के तावेदारों ने
इसीलिए लगता है हमको चारों ओर अंधेरा है

हम अंधों की तरह जीये यह अपनी ही कमजोरी है
आंख खोल के देखो साथी कितना सुर्ख सवेरा है

अब हमें अंधी गुफाओं से निकलना होगा
धूप चाहेंगे तो थोड़ा सा झुलसना होगा

जिनसे इन्सान को बदबू के सिवा कुछ न मिला
धर्म के ऐसे लिहाफों को बदलना होगा

खून की प्यास खुदा को तो नहीं हो सकती
हमें शैतान की नीयत को समझना होगा

बुग्ज सदियों की इबादत का नतीजा है अगर
फिर हमें अपने यकीनों को बदलना होगा

मेरे घर में अगर सांपों का बसेरा होगा
चाहे हिंसा ही सही उनको कुचलना होगा

नस्ले आदम ने भला कैसी तरक्की की है
अब तो बन्दों से खुदा को भी संभलना होगा

न जाने कितनी बार तराशा गया हूँ मैं
फिर भी तुम्हारे कद से तो ऊंचा रहा हूँ मैं

जब जब भी सर उठा के चला हूँ ज़मीन पर
तुमको यही लगा कि कोई जलजला हूँ मैं

तुमने मेरा वजूद मिटा तो दिया मगर
देखो खरोंच की तरह अब भी पड़ा हूँ मैं

मारा गया मुझे कई हिस्सों में बांट कर
काफी हूँ फिर भी दोस्तों जितना बचा हूँ मैं

ज़ख्मों से कहीं टीस न उठ जाए फिर कहीं
अब भी तुम्हारे ज़ुल्म को भूला नहीं हूँ मैं

रक्त मानव का है ऐ सदाचारियों
बेशरम हो के बस आचमन कीजिए
सारी शक्ति तुम्हारे ही हाथों में है
चाहे जैसे हमारा दमन कीजिए

द्वेष रूखसत हो जब भी मेरे देश से
जब भी होने लगे शान्त वातावरण
तो कसम है तुम्हें ऐ अमन—शत्रुओं
धर्म के नाम पे विषवमन कीजिये

यह मेरा देश है सन्त के भेष मे
घर में रावण भी आये तो सत्कार है
हर सीता यहां अब भी अनजान है
तुमको मौका मिला है हरण कीजिए

वो ही मन मे जगाये हुए आस्था
ढमतों पलकों को मूंदे हुए है सभी
तुमको अवसर मिला स्वार्थों के लिए
देश पूरे को चाहे हवन कीजिए

जो भी इस दौर से गुज़रा है बेचारा होगा
ठीक मेरी ही तरह वो भी अकेला होगा

सिर्फ पत्थर के सिवा कुछ भी नहीं दूर तलक
ऐसे वीराने में भटका हुआ प्यासा होगा

यह सफ़र है तो कभी खत्म भी होगा आखिर
या कि ताउम्र यूं ही धूप में जलना होगा

जरा कुछ देर तो दम ले लूं किसी नीम तले
और कुछ भी न सही सर पे तो साया होगा

ये भरे घर हैं या कब्रों की कतारें यारो
मैंने सोचा था बड़ा शहर है जिन्दा होगा

इस से आगे नही मिलते कहीं क़दमों के निशां
बस इसी मोड़ से आगे मुझे चलना होगा

किस लिए वो याद अब आने लगी
जिन्दगी की शाम गहराने लगी

इस पुराने पेड़ पर अब किस लिए
एक चिड़िया आके चहचहाने लगी

अब ये मौसम, ये हवाएं क्या कहूं
चाहतों की शाख मुर्झाने लगी

थरथराते एक पत्ते की तरह
सारी दुनिया अब नजर आने लगी

क्या हुआ जो अब सिरहाने बैठकर
मेरी हमदम बाल सहलाने लगी

अब कोई शिकवा शिकायत किस लिए
सो ही जाएं नींद जब आने लगी

वो जो खुद को राहबर कहता रहा
सारे रस्ते पीठ पर बैठा रहा

अब भला लंगड़े को अंधा क्या कहे
वो जिधर कहता उधर चलता रहा

यह सफर तय किस तरह हो पायेगा
हर कदम पर बस यही खटका रहा

एक मुद्दत हो गई चलते हुए
ठोकरें खा के भी मैं हसंता रहा

मैं उसे फेंकूं तो आखिर किस तरह
मुझसे मेरी जोस्त सा लिपटा रहा

मिलने की मनवारें है
बीच कई दीवारें है

हालातों के कैदी लोग
कितने बेचारे है

बसते रहे गांव–शहर
लोग तो बंजारे है

जीत के भी बाजी हम
सब कुछ हारे है

हम जीये हैं ऐसे जैसे
झील के शिकारे हैं

आदमी है हम या
चोराहे के उतारे है

भूले हुए हैं लोग मुहब्बत के असर को
ज़हर ही मारेगा यहां अब तो ज़हर को

हम वक्त के बदले हुए तेवर नहीं समझे
मैखाना समझते रहे साकी की नजर को

हर मील का पत्थर यहां लगता है लुटेरा
वो लोग हैं अनजान जो निकले हैं सफर को

जब भी उन्हें लगता है उजाले की कमी है
तो आग लगा देते हैं मजलूम के घर को

जिस दिन से यहां अम्न का ऐलान हुआ है
दहशत निगलने लग गई आजाद बशर को

अपना सब कुछ भूल गया हूँ बस्ती में
मैं तो इक गुमनाम पता हूँ बस्ती में

तुमने शायद कहीं भटकते देखा हो
कब्र से खुद को ढूंढ रहा हूँ बस्ती में

जाने-पहचाने चौराहे गलियों में
भईया कितनी बार लुटा हूँ बस्ती में

बिकने को तो यहां सभी कुछ बिकता है
मैं उनमें सब से सस्ता हूँ बस्ती में

जब भी कोई बज्म सजाई जाती है
मैं दरियों की तरह बिछा हूँ बस्ती में

मेरा कोई नाम नहीं पहचान नहीं
बस ईंधन की तरह जला हूँ बस्ती में

अपनी बाहों में बड़े प्यार से भरता पानी
झुला रहा है मुझे चढ़ता उतरता पानी

कभी सीने में मचलते हुए तूफां की तरह
कैसे उठता है, उफनता है बिफरता पानी

हजारों रंग लुटाता उदास राहों में
तेरे जलवों की तरह है ये गुजरता पानी

सूनी घाटी में भला किसको सदा देता है
किसी पहाड़ के सीने से ये झरता पानी

एक भटके हुए अनजान मुसाफिर की तरह
क्यूं मुझे लगता है जंगल से गुजरता पानी

फूट का परिणाम अब कितना भयंकर हो गया
प्रेम से सींचा हुआ यह खेत बंजर हो गया

इतना दूषित हो चुका है देश का वातावरण
सांस घुटती जा रही है दिल तो पत्थर हो गया

किस तरह ये धर्म मन में जहर भरने लग गये
अच्छा खासा आदमी था आज विषधर हो गया

जब से यह भक्तों के हाथों अम्न का मन्दिर लुटा
मुल्क का हर आदमी लगता है बेघर हो गया

अनगिनत भगवान थे जिसकी सुरक्षा में खड़े
किस तरह फिर देश मेरा आज खण्डहर हो गया

आसमान को तकता है
कोई पागल लगता है

जाने किसका नाम है जिसको
तोते जैसा रटता है

चौंक रहा है क़दम क़दम पर
साये से भी डरता है

सुनने वाला कोई नहीं है
जाने फिर क्यूं बकता है

सांस सांस पे दर्द का मारा
अपना सीना मलता है

किसे बताऊं मुझको तो यह
मेरे जैसा लगता है

हमको कहां तक सताग्रोगे ग्रब
क्या यूंही उम्र भर जुलम ढाग्रोगे ग्रब

चलनियों को बनाने लगे कश्तियां
तैरने के नहीं डूब जाग्रोगे ग्रब

तुमसे उंगली पे पर्वत उठेगा नहीं
इन ग्वालों को कैसे बचाग्रोगे ग्रब

भोर ग्राई ग्रौर ग्राके चली भी गई
खुद न जागे हमें क्या जगाग्रोगे ग्रब

तुमसे होने को कुछ भी नहीं दोस्तों
यूं ही शोर कब तक मचाग्रोगे ग्रब

सामने जो ये कटा पड़ा है तेरा ही तो हिस्सा है
ग्रांख खोल के देख दीवाने तूने किसको मारा है

इतनी सदियां बीत गई है इन्सानों की बस्ती में
फिर भी तू व्यवहार से अपने एक दरिन्दा लगता है

तेरा दुश्मन कोई नहीं है भाया समझ इशारों को
कब से सब कुछ देख रहा है फिर भी जैसे अंधा है

देख जरा ये पत्ते कैसे एक पेड़ से चिपके है
तू अपनों के बीच भी रह कर साथी कितना तन्हा है

तूने मारा आज इसे कल तू भी मारा जायेगा
देख रहे हैं हम मुद्दत से यही सिलसिला चलता है

देख प्यार से मिल तो सही तू तुझे पता चल जायेगा
तुझ से कुछ भी अलग नहीं है सब कुछ तेरा अपना है

क्या हुआ कि लोग पागल हो गये
इस तरह उजड़े कि जंगल हो गये

चोटक का कोई निशां दिखता नहीं
किस तरह ये जिस्म घायल हो गये

क्या भला इनकी जबाने कट गई
इस कदर खामोश बुझदिल हो गये

रहबरों ने जो दिखाये थे हमें
रास्ते सारे ही दलदल हो गये

न बरसते न गरजते है कभी
हम सभी ऐसे ही बादल हो गये



अजीज आजाद

- जन्म : 21 मार्च, 1944
- शिक्षा : एम० ए० (इतिहास)
- प्रकाशित कृतियां :
  टूटे हुए लोग (उपन्यास)
  महापुरुषों की जीवनियां
- विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं व संग्रहों में
  कई ग़जलें, कविताएं व कहानियां प्रकाशित
- सभी विधाओं में लेखन
- प्रकाश्य रचनाएं :
  एक दिन अपना (कहानी संग्रह)
  भारतीय खिलाड़ी, बच्चों की कहानियां
  दो नाटक बच्चों के लिए
- सम्प्रति : अध्यापक,
  राज० सादुल उ० मा० विद्यालय, बीकानेर
- सम्पर्क : मोहल्ला चूनगरान, बीकानेर